प्रात: क्लास    ओमशान्ति    (रूहानी समाचार)    12-10-67

बच्चों को बाप समझाते हैं अपन को आत्मा समझ कर देखो।और बाप को याद करो।यह तो रोज बाबा का कहना है। छोटे2 बच्चों को भी सिखलाना चाहिए।गुड मार्निंग,गुड नाईट तो कहते है ना।बाप भी बच्चों को कहना चाहिए अपन को आत्मा समझो,शिव बाबा को याद करो।कोई भी कह सकते हैं।जैसे कोई अर्जी की जाती है ना।बच्चों को भी समझाओ।अपन को भी समझाओ।यह बहुत कल्याणकारी अक्षर है।जो ब्रह्माकुमारियां ही कह सकती हैं।भाऊ या दादा, या बहन जी।कोई भी मिले बोलो शिव बाबा कहते हैं अपन को आत्मा समझ मुझे याद करो।तो तुम्हारा पाप भस्म हो जावेंगा।तुम पुण्यात्मा स्वर्ग के मालिक बन जावेंगे।बच्चों को भी यह समझाये दो।कोई भी मित्र-संबंधी आद आवे उनको हैंड बिल भी देवें। और फिर यह भी सुनावे कि यह है सब से बड़ा गुण बाप का परिचय देना।गीता जो पढ़े हुये होंगे उनको भी बहुत अच्छा लगेंगा। समझ जावेंगे भगवान शिव को कहते हैं तो ऐसी2 बातें अपन पास नोट कर दो। जो भी मिले मैं रिक्वेस्ट करता हूं अपन को आत्मा समझो और शिव बाबा को याद करो।वह ऊंच ते ऊंच पतित पावन है।शार्ट में ऐसे बनाओं जिस से अर्थ पूरा न निकल जाये।बहुत सिम्पल है।तुम यह याद कराये बहुतों का कल्याण करेंगे।स्कूलों में भी भाषण पर तुमको बुलाया जाता है।क्योंकि यह सब समझते हैं बच्चो की कैरेक्टरस बिगरनी हैं। टीचरस आद समझ जावेंगे इस शिक्षा से बरोबर कैरेक्टर सुधरती जावेंगी।पापात्माओं की कैरेक्टर हो पाप की है। इस कैरेक्टरस पवित्र देवता बन जावेंगे।शिव बाबा को याद करो तो पाप भस्म हो जाये। विकार में न जाओं।जब भी भाषण आद पर जाते हो तो यह है मुख्य शिव बाबा का ईश्वरीय मंत्र। बाकि और सभी हैं आसुरी मंत्र।ईश्वरीय मंत्र एक ही बार मिलता है।फिर आधा कल्प यह मंत्र मिलना ही बन्द हो जाता है।यह अच्छी रीत समझाना है।दिन प्रति दिन नई2 प्वाईन्टस भी निकालते रहेंगे।आज भी बाबा का ख्याल चल रहा था यह राधा बच्ची बाबा के पास आई, अच्छी पढ़ी लिखी है।तो बाबा समझाये रहे थे अपनी है रूहानी न्युज।न्युज अर्थात समाचार।अब रूहानी समाचार नाम वाले तो कोई अखबार हैं नहीं। एक मोहिनी बच्ची देहली में भी पढ़ी लिखी है।उनको भी बाबा कहा था एक अखबार निकालो तो अच्छा है।परन्तु इतना ध्यान में न आया।अब देखने में आता है अपनी गवर्मेन्ट का अखबार बहुत जरूरी है। आगे लगा था गाडली युनिवर्सिटी तो बिगरे थे। कितनी लिखा पढ़ी चली। एक आफिसर ने बन्द कर दिया। अच्छे आफिसर बदली हुआ।दूसरे आफिसर के बुधि में बैठ जावे तो कुछ बोलेंगे नहीं।हर एक का ख्याल अपना2 होता है। तो अपनी यह बड़ी गवर्मेन्ट है।अपना कोट आफ आर्मस भी नामी ग्रामी है त्रिमूर्ति शिव का। बाबा ने समझाया था यह कोई भी सतयुग का नहीं। यह संगम युग का कोर्ट आफ आर्मस है।कौरव राज्य भी है।पाण्डव भी हैं।ताज तो दोनो को नहीं है।दिखाते हैं राजाई पर दाव लगाया ।यह सब हैं दन्त कथायें।शास्त्रवादी बड़ी आडम्बर की बातें बैठ बनाते हैं।अब राजधानी तो कोई है नहीं।प्रजा को पंचायती राज्य कहा जाता है।पाण्डवों को भी राज्य नहीं है।कांग्रेस गवर्मेन्ट है तो पाण्डव भी गवर्मेन्ट ठहरी।तो अपने रूहानी न्युज में अच्छी रीत डाल सकते हो।5-10 हजार कापियां निकालो बड़ों2 को भेज सकते हो।हर्जा थोड़े ही है।परन्तु बच्चों को अजन इतना दिमाग खुला नहीं है।हम पाण्डव गवर्मेन्ट हैं।तुम बताये सकते हो यह रूहानी गवर्मेन्ट है।भगवान तो है ही सुप्रीम रूह।किसी मनुष्य को वा देवताओं को भगवान नहीं कह सकते। ऐसी 2 बातें तुम किलेयर कर लिख सकती हो।इसमें बुधि बड़ी अच्छी चाहिए।पढ़ी लिखी चाहिए। बाबा के पास तो बहुत हैं।यह ओमप्रकाश(जबलपुर) बड़ी अच्छी सर्विस करते हैं।दिन प्रति दिन बच्चे होशियार होते जाते हैं। जैसे पटना में जनक है,राज है,पुष्पाल है, बच्चियों ने सर्विस को अच्छा उठाया है। पुरानी जो बच्चियां थी उन में इतना दम न था सर्विस को उठाने का। कोई चढ़ते है तो फिर कोई उतरते भी है ना।सब बच्चों को ग्रहचारी आती है।यह है सच्ची2 कमाई। बच्चे खुद लिखते हैं बाबा माया

है। तूफान बहुत आते हैं। खुशी कम हो गई है। क्योंकि माया से हार खाते हैं ना। ग्रहचारी बहुत कर के बैठ. है। राहु की दशा, मंगल की दशा, शनिचर की दशा होती है ना। सब से कड़ी होती है राहु की दशा। विकार में जाते हैं तो तो फिर राहु की दशा बैठ जाती है। लिखते हैं बाबा हमारी खुशी गायब हो गई। धंधे में इतना टोटा पड़ गया। अब धंधे में फ़ायदा और नुकसान होता है ना। उस में बाबा को कोई तकलीफ नहीं। इसमें आशीर्वाद की बात नहीं रहती। यह तो पढ़ाई है। कृपा नहीं हो सकती। ड्रामा है ना। ड्रामा अनुसार पार्ट बजाया जाता है। बाप कहते हैं मैं भी पार्ट बजाने आता हूँ। मुझे बुलाते हो हे पतित पावन आ। आकर हम को पावन बनाओ। इसके लिए बाप राजयोग सिखाते हैं। इस में गुण भी अच्छी चाहिए। तुम बच्चों ने अच्छी रीत समझा है। कैरेक्टर लेस जो हैं वह कैरेक्टर वाले राजाओं को नमन करते हैं। बाबा ने कहा था यह भी चित्र बनाओ। लिख दो यह पतित यह पावन। इस समय है ही पतित दुनिया। पावन होते ही है सतयुग में। साधु सन्त आद सब पतित के लाईन में आ जाते हैं। तब तो बाप कहते हैं मैं साधुओं का भी उधार करने आता हूँ। यह है ही पतित दुनिया। यहाँ भ्रष्टाचार से ही पैदा होते हैं। इस को कहा ही जाता है विशस वर्ल्ड। वह है वायसलेस वर्ल्ड। वह नई यह पुरानी। पुरानी दुनिया में कोई वायसलेस हो नहीं सकता। संगम पर ही बाप को आना पड़ता है। तो बच्चों को ऐसी2 ख्याल करना चाहिए अपनी अखबार कैसे निकाले। अपनी कमेटी भी बहुत मीठी होनी चाहिए। बाबा जानते हैं कई बच्चियां बहुत अच्छी सर्विस कर रही है। मत भेद बहुत खराब है। मतभेद में राजाओं ने भी राजाई गंवाये दी। वहाँ तो शेर बकरी भी प्यार से चलते हैं। यहाँ तो कितना मतभेद हो जाता है। पटना निवासी खुद जानते हैं आगे बहनों की आपस में नहीं बनती थी। बात-चित करने की भी रायालिटी नहीं रहती। अनपढ़ी है ना। बड़े आदमी से भी तुम तुम कह बात करती है। पति को भी तुम कह देंगी। बात-चित करने की बड़ी पजियलस चाहिए। कैरेक्टर्स अच्छी चाहिए। तुम लिख भी सकते हो सतयुग से त्रेता तक यह कैरेक्टर्स रहते हैं। फिर द्वापर कलयुग में यथा राजा-रानी तथा प्रजा सब कैरेक्टरलेस हो जाते हैं। तुम बच्चे समझाये सकते हो। बाबा ने ऐसे2 कहा है। तुम्हारा सेन्टर गलियों के अन्दर न होना चाहिए। क्योंकि यह तुम्हारे बहुत बड़ी बजिनेस की दुकान है। भल घर के माताओं को वहाँ आना सहज होता है परंतु आज कल तो मातायें भी खड़ी हो गई हैं। जहाँ-तहाँ खुले रीत जाती है। तुम्हारी है रूहानी दुकान। जिसमें ज्ञान रत्नों का सौदा मिलता है। जिनका कनेक्शन होगा आस्ते2 उन्हों की बुधि का ताला खुलता जावेगा। बाप से वर्सा लेने पुरुषार्थ करने लग पड़ेंगे। जो अच्छी रीत सर्विस करते हैं वह कितने मीठे लगते हैं। न पढ़ने वाले उन्हों के आगे जाये झाड़ु लगावेंगे। सर्विसएबुल ही दिल पर चढ़े रहते हैं। तुम जानते हो यह हमारी राजधानी स्थापन हो रही है। कहते हैं बाबा हम तो लक्ष्मी नारायण बनेंगे। परंतु लायक भी बनना है ना। इस पर नारद का भी मिसाल देते हैं। नारद एक तो नहीं। ऐसे तो बहुत हैं ना। इतने ढेर भक्त हैं। सब नर से नारायण बनेंगे क्या जब तक नालेज नहीं धारण करते हैं तब तक तो पत्थर बुधि ही हैं। समझते नहीं हैं भगवान ने ही यह राजयोग सिखाया था। कृष्ण को तो भगवान नहीं कहते। ब्रह्मा, विष्णु, शंकर को भी भगवान नहीं कहते तो मनुष्य शरीरधारी को भगवान कैसे कह सकते। कृष्ण तो प्रिन्स था। फिर स्वयंवर बाद लक्ष्मी नारायण बन कर राज्य कर के गये हैं। स्वयंबर बाद गद्दी पर बैठने से राजा कहा जाता है। प्रिन्स को राजा नहीं कहेंगे। तो बाप युक्तियाँ भी बतलाते रहते हैं। पहले2 कोई से भी मिलो तो उनके कल्याण करने की बात दो। हम अर्जी करते हैं, एक तो आप अपन को आत्मा समझो। और शिव बाबा ने कहा कि मुझे याद करो। मैं सर्व का पतित पावन हूँ। अथार्टी हूँ। मैं सभी वेदों शास्त्रों को जानता हूँ। यह सब सामग्री है भक्ति मार्ग की। इन से कब कोई का कल्याण नहीं हो सकता। न मेरे से मिल सकते हैं। कल्याणकारी बाप ही

ये कल्याण कारी बनाते हैं।जैसे बाप कल्याण कारी है वैसे तुम बच्चें भी कल्याण करते रहो।पहले2 बात ही यह। बाकी आद पहनने पहले बोलो अपन को आत्मा समझ और बाप को याद करो।बाप कहते हैं पतित पावन मैं हूं।मुझे याद करने से तुम्हारे विकर्म विनाश हो जावेंगे।जितना याद में रहेंगे उतना उंच पद पावेंगे।यह तो पक्का करो।कहेंगे यहां तो बहुत अच्छा सिखाया जाता है।सभी कहते हैं भारत का कैरेक्टर लो हो गया है।परन्तु हाई कब था।कैसे हुआ यह किसको भी पता नहीं।बाबा ने समझाया लक्ष्मी नारायण का चित्र भी हो।यह है राजाओं का महाराजा। बाप कहते हैं हम तुमको राजाओं का महाराजा बनाता हूं।श्री नारायण को महाराजा, राम को राजा कहेंगे।भारत में यह चला आता है।महाराजाएं भी होते हैं तो हैं तो राजाएं भी होते हैं।ब्रिटिश गवर्मेन्ट जब थी तो बड़े2 जमीन्दार जो होते थे उन्हों को राजा महाराजा का टाइटल देते थे। वह लोग पैसा लाख डेढ़ लाख देते थे।और वह टाइटल दे देते थे।जमीन्दारी के हिसाब से। आगे तो हीरे जवाहर देते थे।तो झट रिकमिन्ड कर लेते थे।अब तुम माताओं को सर्विस में अच्छी रीत ध्यान देना है। गोपों को भी माताओं को आगे बढ़ाना है। वह शोभता है।गवर्मेन्ट भी आजकल फिमेल्स को परफरेन्स देते हैं।बाबा भी आये माताओं को उठाते हैं।क्योंकि यह हो दासी होकर रही हैं।स्त्री को कहा जाता है पति तुम्हारा ईश्वर गुरु है।यह उलटी रसम कहां से निकली है।शास्त्रों से, भक्ति मार्ग के चित्रों से।आज कल के साधु सन्त भी स्त्रीयों से बैठ पांव दबवाते हैं।इस बाबा ने 12 गुरु किया है, बहुतों को पांव दबाई है।झूटा खाते रहते है तो भी पांव दबाते रहेंगे।यह तो भक्त माना। तब बाबा ने कहा इन गुरुओं आद सब को छोड़ो।यह सब भक्ति मार्ग के हैं।आधा कल्प है भक्ति।आधा कल्प फिर ज्ञान से वर्सा मिल जाता है। वह लोग ~~गीता पढ़ते हैं कितनी आमदनी होती है।~~ वह सब शास्त्र सुनते सुनाते हैं। एमआवजेक्ट कुछ है नहीं।सिवाय गीता के।गीता में है मैं तुमको राजाओं का राजा बनाता मनुष्य से देवता बनाता हूं। देवी-देवताओं का राज्य था ना।तुम बच्चों को तो बहुत खड़ा होना चाहिए।आपस में मिल कर सर्विस को उठाओ।सुनते तो सब बच्चें हैं।फिर तुम अखबार में भी यह सब डाल सकते हो।तुम हर बात में लिखते रहेंगे 5000 वर्ष पहले यह हुआ था।पलना भर गया 5000 वर्ष पहले मिसल। जैसे न्यू अखबार में एक आर्टीकल सदैव निकलती है कि यह 100 वर्ष पहले भी हुआ था। तुम लिखेंगे 5000 वर्ष पहले हुआ था।कोई भी काम निकाला जाता है उसमें पहले जरूर खर्चा होता है।व्यापार किया जाता है। पहले थोड़ा नफा होता है पीछे बहुत।ग्राहक बहुत आते जाते हैं।बढ़ाते जाते हैं।इसमें भी खर्चा होगा।विश्व की बादशाही स्थापन हो रहा है।खर्चा तो होगा परन्तु युक्ति से चलाना है। बच्चें सब कुछ अपने लिए ही करते हैं।इस ने जो कुछ किया सो यह मालिक बन जाते हैं।लेन-देन होती है ना। इन बातों को दुनिया नही जानती।कहते हैं बाबा हमारा तन मन धन, कलयुगी संबन्ध, धन दौलत सब ले लो। सुख तो कोई है भर न सके।और ही नम्रता भाव में आ जाते हैं।बाबामामा सब कुछ काम करते थे ना।समझते हैं जैसे कर्म हम करेंगे हमको देख और सब करेंगे।बच्चें देख कर सिखेंगे।तो बाबा मामा भी सब कुछ करते थे। तब बाबा समझाते हैं ब्राह्मणियां भी ऐसा काम न करें जो और देख सिख जायें।ब्राह्मणी खटिया पर बैठ चाय आद लेंगी तो और भी सिख जावेंगे।यहां सुख ले लिया तो वहां कम हो जावेगा।यहां हुकुम रानी नहीं बनना है।बाबा कहते हैं हम ओबिडियन्ट सर्वेन्ट हैं।यह तो फिर भी बुजुर्ग है।परन्तु काम में हाथ डाल देते हैं। सब आ जावेंगे। बड़ों को खबरदार रहना है।जैसे हम कर्म करेंगे तो और ही सिख जावेंगे। यहां तो तुमको वनवाह में रहना है।अच्छा कपड़े जेवर आद सब उतार देते हैं।यहां तो रात-दिन सर्विस में लग जाना है।सर्विस तुम्हारी बहुत बड़ी है।सारे विश्व को शिवालय बनाना है।कितनी बड़ी सर्विस है। बाबा अकेला थोड़े ही विश्व को शिवालय बनावेंगा।जो निर्धन हैं उनको कोशिश कर धन में न